प्रेमचंद की कहानी 'नशा'

ISSN 2394-1723
मूल्य : 40 रुपए

वागर्थ

वर्ष 32 अंक 368 जुलाई–2026

लेखक : वैश्विक मानवता और शांति

वैदेही (कन्नड़) दीपक कुमार बरकाकाती (असमिया)
दिव्या विजय (हिंदी) पीयूष सरकार (बांग्ला)
जिन्शा गंगा (मलयालम) अजय सोनी (गुजराती)
प्रस्तुति : सुशील कान्ति

कहानियाँ

संजय अलंग
ईशिता गिरीश
अर्चना पैन्यूली
चंद्रकला पांडेय
मौमिता (बांग्ला)

संस्मरण

ऋत्विक घटक : जन्म शताब्दी

विश्व दृष्टि

ल्यूडमिला खेरसोंस्की से
रूस–यूक्रेन युद्ध पर साक्षात्कार

भारतीय भाषा परिषद

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका

वर्ष 32, अंक 368, जुलाई 2026

संपादक
शंभुनाथ

प्रबंध संपादक
प्रदीप चोपड़ा

प्रकाशक
डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग
अंक सज्जा
सुशील कान्ति

संपादकीय विभाग
36 ए, शेक्सपियर सरणी
कोलकाता–700017
vagarth.hindi@gmail.com
7449503734
(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण
तारक नाथ राय

इस अंक में

हिंदी लेखक का संकट : **संपादकीय** 5

कहानियां

एंटर–कोड दंडकारण्य : **संजय अलंग** 12
धर्माह्वचमारन : **ईशिता गिरीश** 16
इवान का लंचबॉक्स : **अर्चना पैन्यूली** 24
थैंक्स : **चंद्रकला पांडेय** 32
बेहुला (बांग्ला कहानी) : **मौमिता**
(अनुवाद : **विजय कुमार यादव**) 35

स्मरण

नशा (कहानी) : **प्रेमचंद** 40

कविताएं

कुमार विश्वबंधु/शांति नायर/गोलेंद्र पटेल/निवेदिता झा/ऋतु त्यागी/सौम्य मालवीय/अविनाश भारती/अमित कुमार मिश्रा/रामबहादुर चौधरी चंदन/शशिआनंद अलबेला/47
कन्नड़ कविताएं : **वैदेही** 58

परिचर्चा

लेखक : वैश्विक मानवता और शंति : **वैदेही/दीपक कुमार बरकाकाती/दिव्या विजय/पीयूष सरकार जिन्शा गंगा/अजय सोनी/**(प्रस्तुति : **सुशील कान्ति**) 59

संस्मरण

ऋत्विक घटक जन्मशताब्दी : **मदन गोपाल सिंह**
(अनुवाद : **मृत्युंजय श्रीवास्तव**) 86

विश्वदृष्टि

रूस–यूक्रेन युद्ध पर रूसी लेखिका **ल्यूडमिला खेरसोंस्की** से साक्षात्कार
(हिंदी प्रस्तुति : **बालकृष्ण काबरा 'एतेश'**) 92

समीक्षा संवाद

आज के कवियों के सामने चुनौतियां : **संजय जायसवाल**

(श्रुति कुशवाहा, रूपम मिश्र, विजय राही और सुभाषा राय की पुस्तकें) 99

सोशल मीडिया 109

विविध

पाठक संसद/किताबें/सांस्कृतिक गतिविधियां 112

लघुकथा

ये जो हैं दिलवाले : **मार्टिन जॉन** 31

बतरस

मेरीऐन, भेद बताओ : **कुसुम खेमानी** 118

देश-देशांतर

सीताकांत महापात्र (ओड़िया)/ **ल्यूडमिला खेरसोंस्की** (कैरेबियन)

कविताओं में रेखांकन :
अनुभूति गुप्ता

वागर्थ सदस्यता और बिक्री संपर्क

एक प्रति : 40/-

सामान्य वार्षिक सदस्यता (डाक व्यय सहित) : 450 रुपये

वार्षिक सदस्यता (रजिस्टर्ड डाक) 450+510 = 960 रुपये

त्रैवार्षिक सदस्यता : 1350 रु.। रजिस्टर्ड डाक से = 2880/-

आजीवन : 10,000 रुपये/**(साधारण डाक)** विदेश : **वार्षिक** : 80 डॉलर

भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें

एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street, A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।

भुगतान के बाद एस एम एस या व्हट्सअप कर दें 8910269814 : **मीनाक्षी दत्ता**

जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक

समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।

● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।

● वेबसाइट : **www.bharatiyabhashaparishad.org**

वागर्थ प्रबंध प्रभार **: मीनाक्षी दत्ता**

वितरण तथा अन्य कार्य **: अशोक बारीक, बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक, संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक**

आप क्यू आर कोड स्कैन करके भी **भारतीय भाषा परिषद** के नाम भुगतान कर सकते हैं। भुगतान करने के बाद मोबाइल नंबर सहित संपूर्ण विवरण भेज दें।

संपादकीय

हिंदी लेखक का संकट

लेखक का संकट साहित्य के सामने उपस्थित संकट का प्रतिरूप है। साहित्य जब अपना सामाजिक स्थान खोने लगता है, लेखक की जरूरत धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है। लेखक का संकट आज बढ़ गया है क्योंकि उसपर बाजार, राजनीति, मीडिया और एआई- इन चार चीजों का भारी दबाव है।

हालांकि यदि फेसबुक के दृश्य देखें, लगेगा कि पृथ्वी कछुआ नहीं साहित्य की पीठ पर टिकी है। कहीं पुस्तक लोकार्पण है, कहीं सम्मान समारोह है, कहीं कवि इकट्ठे हो रहे हैं, कहीं सेमिनार तो कहीं लिटरेरी फेस्टिवल है। कहीं खुला रसरंजन है। यह भी दिख सकता है कि इस युग के सारे लेखक महान हैं। ऐसे लेखकों की दृष्टि में पहले कोई बड़ा हिंदी कवि-लेखक नहीं हुआ या मुश्किल से एक-दो हुए भी तो तीसरे वे खुद हैं! इधर सैकड़ों साल की साहित्यिक परंपराओं के सामान्य ज्ञान की भी जरूरत नहीं समझी जाती। कई लेखक सर्वज्ञता के पिंजड़े में हैं। साहित्य का एक बाजार लगा है जहां हर लेखक अपनी ही आत्मा का फेरीवाला है!

हिंदी लेखन में सामान्यत: सपाटता बढ़ी है, गहराई घटी है। औसत और सतही अभिव्यक्तियों को बढ़ावा देने में डिजिटल मीडिया की भूमिका सबसे बड़ी है। लेखक गहराई के साथ कुछ कहने की जगह जब तुरंत प्रतिक्रिया देते हैं, बौद्धिक सतहीपन को जगह मिलती है। कई बार निजी शत्रुता का या बे-सिरपैर का मुंहफट लेखन ही बोल्डनेस का प्रतीक बन जाता है। यह भी कम चिंताजनक नहीं है कि कई अच्छे लेखक सुरक्षित लेखन कर रहे हैं ताकि गुंजाइश बनी रहे। वे बाईपास पकड़ते हैं या ऐसी पुरानी धारणाओं में बसे रहते हैं जो अप्रासंगिक हो चुकी हैं। इधर लेखन बड़े पैमाने पर चर्वित चर्वण है, होमोजीनियस। कोई दुविधा नहीं है, अब सुविधा ही सबकुछ है।

एक स्थिति लेखक के अकेले होते जाने की है जो सभ्यता के अपने ही शोर से बहरा हो जाने का चिह्न है। लेखक अपने परिवेश में इतना अधिक अजनबी कभी न था। एक दूसरी स्थिति लेखक के भीड़ का हिस्सा बन जाने की है जब वह किसी 'भिन्नता' का प्रवक्ता होता है।